- द्वितीय अध्याय -

# नरेन्द्र कोहली की कहानियों का विकास

## 2. नरेन्द्र कोहली की कहानियों का विकास

**नरेन्द्र कोहली की कहानी-यात्रा :**

आधुनिक हिन्दी कथा-साहित्य के सिध्दहस्त नये कहानीकारों में नरेन्द्र जी का नाम आता है। आपकी प्रथम प्रकाशित रचना "दो हाथ" मानी जाती है। जो कि सन् 1960 ई. में लिखी गयी थी। विषय की विविधता, शोषित समाज का चित्रण, चमत्कृत शैली तथा काम एवं प्रेमांकन की दृष्टि से उनकी कहानियों ने निश्चित ही अपना स्वतन्त्र एवं अलग स्थान स्थापित किया है। आपकी अब तक की प्रकाशित कहानियों का सम्पूर्ण संकलन "समग्र कहानियां" भाग-1 और भाग-2 में किया है। इसमें कहानी का अभाव, दृष्टिदेश में एकाएक, शटल, नमक का कैदी, निचले फलैट में, तथा संचित भूख नामक कहानी संग्रह संकलित हैं। समग्र कहानियाँ भाग एक में 41 कहानियाँ है और भाग दो में 29 कहानियाँ संकलित हैं।

आधुनिक युग की संवेदनाओं को लेकर चलनेवाले कथाकारों में नरेन्द्र जी प्रमुख हैं। आपकी कहानियों में सामाजिक जीवन का सूक्ष्म अध्ययन मुखरित होता हैं। विषय की विविधता, शोषित समाज का चित्रण आदि इसमें दृष्टव्य हैं। इसलिए उनकी कहानियाँ निश्चित ही अपना खास एवं अलग स्थान स्थापित करती हैं। कालक्रम के अनुसार नरेन्द्र कोहली जी के कहानियों का स्थूल अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है -

**समग्र कहानियाँ भाग - 1 :** (प्रकाशन वर्ष 1991, प्रकाशक - पराग प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली - 32)

इसमें कुल मिलाकर 41 कहानियाँ संकलित हैं। "बदतमीजी" इस कहानी में लेखक ने बताया है कि, परिवार के सदस्यों में एक दूसरे को समझ पाने की इच्छाशक्ति न होने के कारण उनमें छोटी-सी बात के कारण किस तरह तनाव बढ़ते है इसका चित्रण बहुत ही खुबी से किया हैं। "राजा दशरथ के बेटे" में आज के बेखबर माता-पिता की ओर संकेत किया है, जो अपने संतान की ओर ध्यान नही देते। बच्चों की आयु तो दिन-ब-दिन बढ़ती ही जाती हैं। पर उनके विवाह के बारे में वे कुछ सोचते नही। इसके कारण उनमें संघर्ष निर्माण होते हैं।

"उजड़े दयार में..." कहानी में स्पष्ट किया गया है कि, आज मनुष्य भीड़ में होकर भी अपने-आप को अकेला महसूस करता हैं। कहानी का नायक रमेश अपने घरवालों के साथ रहता है,

उसकी पत्नी मायके चली गयी है तो वह भीड़ में भी अपने आप को अकेला महसूस करता है और कहता है - "लगता नहीं है, जी मेरा उजड़े दयार में।"[1] "दो-ढ़ाई और आठ" कहानी में लेखक ने परावलंबी नारी का चित्रण किया है। आज नारी पढ़लिखकर ऊँची चोटी पर पहुँच गयी है, फिर भी पुरूष रूपी हथकडियों ने उसे जकड़ लिया है। वह कितनी भी पढ़ी-लिखी क्यों न हो, वह कभी स्वतंत्र नहीं हो सकती। वह मनचाहा बर्ताव नहीं कर सकती। इस कहानी में माध्यम से नारी की दुरावस्था पर प्रकाश डाला गया है। "कहानी का अभाव" कहानी की विधा संबंधी पूर्व-मान्यताओं को सशक्त चुनौती देती है। लेखक ने इसके माध्यम से कहानी के बदलते मिजाज को अत्याधिक खूबसुरती से चित्रित किया है। "आयाम-रहित कहानी रचना नरेन्द्र कोहली की कहानियों का सहज स्वभाव है। उनकी कहानियों में वैविध्य नहीं है जो उनके व्यंग्य-निबंधों में है।"[2]

"नाबालिग वर" कहानी में बताया है कि, आज-कल माता-पिता अपने लड़कियों की बीना राय लिए उसका विवाह किसी अनजान लड़के से करवाते हैं। इसके कारण दाम्पत्य जीवन में अनेक समस्याएँ उभर आती हैं। "लोगों के बच्चे" कहानी में नारी की अहम् भावनापर प्रकाश डाला है। "यह कहानी माँ-बाप के उस मानसिकता की द्योतक है जिसमें अपने बच्चे गुणशून्य और दूसरों के बच्चे गुणों की गांठ।"[3] कहानी में नायिका अपने बच्चें को उन्नति के राह पर चढ़ाने के बजाए वह उसे अवनति के राह पर घसीटती है। "गाड़ीवान" कहानी में लेखक ने दहेज लेनेवाले लोगों पर तीखा व्यंग्य कसा है। दहेज के कारण आज के युवक-युवतियों को अपने प्यार की बुर्बानी देनी पड़ती है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने दहेज लेनेवाले लोगों का पर्दाफाश किया है। "सहारा" कहानी में माध्यम से लेखक ने बताया है कि, आज अर्थ के अभाव के कारण लोगों को किन-किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। कहानी का नायक पढ़ना चाहता है। पढ़ने के लिए वह इलाहाबाद जाना चाहता है, लेकिन उसके पास पैसों की कमी है। उसके पिताजी भी अर्थ के चक्की में बुरी तरह पिसे जा रहे हैं। वह उसे इलाहाबाद जाने के लिए रोकते है तो वह कहता है - "मत दीजिए एक पैसा भी आप। "मैं कोई-न-कोई प्रबंध कर ही लूंगा।"[4] बीना किसी संकोच के वह उपर्युक्त वाक्य कहता है। वह स्वावलंबी है। स्वयं टयुशन लेकर अपनी पढ़ाई जारी रखता है। उसका बड़ा भाई उसे सहारा देता है। अर्थ का अभाव आज के युवकों के प्रगति की बाधा है। "मम्मी पापा और बेबी" इस कहानी के नायक और नायिका में उनकी बेबी को लेकर हमेशा झगड़ा होता है बेबी जब कोई अच्छा काम करती है तो उसका श्रेय वे दोनों अपनी ओर लेने लगते हैं। इससे उनमें तनाव बढ़ता है। जब वह डिबेट में कप जीतकर लाती है तो उसके पापा उसका श्रेय अपनी ओर लेते हैं तो मम्मी कहती है - "हां हां, तुम्हारी ही तो बेटी है। मेरी होती तो घर में बैठती। दिन-भर

आवारागर्दी नहीं करती। अभी तो खुश हो - मेरी बेटी, मेरी बेटी। कल जब दुनिया वर्मा साहब की बेटी को छोकरों के समान घूमते देख आंखे तरेरेगी तो मुंह न दिख पाओगे.....।"[5] कहानी के माध्यम से मानव जाँति के झूठे अहंकार को स्पष्ट किया है। "आहत प्यार" में बताया गया है कि, आजकल लोग सच्चाई की तरफ ध्यान नहीं देते जो झूठाई का बुरखा ओढे बैठे हैं, उसकी ओर ही वे आकर्षित होते हैं। साथ-ही टूटते हुए प्यार का चित्रण भी किया गया हैं। आज के युवक, जिन्हें बचपन से उनके माता-पिता ने पाला-पोसा सच्चा प्यार दिया वही युवक शादी के बाद उनका सच्चा प्यार भूलकर अपने पत्नी के मायके चले जाने पर अपने आप को अकेला महसूस करते हैं। जैसा कि इस दुनिया में सिवा पत्नी के उनका और कोई नहीं हैं। "संगिनी" यह एक प्रेम कहानी हैं। लेकिन इसमें गंभीरता की ओर ध्यान नहीं दिया गया। कहानी में बताया गया है कि, इस कहानी नायक और नायिका एक दूसरे पर जी जान से प्यार करते हे वे दोनों एक दूसरे के बिना जी नहीं सकते। अपने पिताजी के कहने पर नायक अपने प्यार की कुर्बानी देता है। अंत में उसका विवाह ही दूसरे लड़की से होता है पर वहाँ भी वह चैन नहीं पाता। उसकी पत्नी उसके बच्ची के बालों को तेल लगा रही थी तो उसे लगता है - "वह रो पड़ेगी अभी। पर मुझे कुछ हुआ नहीं, मेरे भीतर कुछ पिघला भी नहीं। मैं कठोर दृष्टि से देखता रहा अपनी जीवनसंगिनी की ओर, जो मेरी बेटी के बाल नोच रही थी, तेल लगाने के बहाने।"[6]

"होनेवाली पत्नी" कहानी में पुरूष के अहंकारी वृत्ति को फटकारा हैं। साथ ही साथ नारी की पीड़ा को स्पष्ट किया हैं। आज-कल निर्जिव पदार्थों के समान नारी का क्रय विक्रय होता हैं। वह कितनी भी पढ़ी-लिखी क्यों न हो उस पर पुरूष रूपी राक्षस अत्याचार करता ही हैं। कहानी के माध्यम से लेखक ने नारी की दुर्बलता पर प्रकाश डाला हैं। "उसने गलत नहीं कहा था" में भी प्रेम का चित्रण किया हैं। शैल, अनी से बहुत प्यार करता हैं। वह इतनी सुंदर नहीं है, फिर भी उसे उसमें सुंदरता दिखायी देती हैं। दोनों भी एक-दूसरे को चाहने लगते है, पर उनका प्रेम सफल नहीं होता। अनी की शादी उसके पिता किसी और से करवाते हैं। लेखक ने इसमें बताया है कि, नारी प्यार में भी व्यवहार जताती हैं। पैसों के कारण वह बदसूरत और निखट्टू को भी अपना पति मान लेती हैं। "जो लड़की पति-रूप में एक बड़े सेठ के सबसे बदसूरत और निखट्टू को पाकर संतुष्ट थी।"[7]

"मालिनी" कहानी में लेखक ने नारी के स्वभाव पर प्रकाश डाला है, जब कोई सुनहरा मौका आता है तो वह उस की ओर ध्यान नहीं देती और वह मौका चला जाय तो उसे पछतावा होता हैं। जैसे कि, कहानी की नायिका मालिनी एक टायपिस्ट है। उसके ही ऑफिस में काम करनेवाले

सेक्शन ऑफिसर को वह चाहती है। नायक जब स्वयं उसके पास प्यार का इजहार करता है तो वह उसके ओर ध्यान नहीं देती और उसकी शादी किसी और से तय होती है वह उसे शादी का कार्ड देने आता है तो वह कहती है - "हां हां, ठीक कह रही हूँ, इतने दिनों से मैंने जो प्यार तुम्हारे लिए पाला है, मैंने जो सपने देखे हैं, उनका क्या होगा?"[8]

"भूखे बच्चें - सुखी डाली" यह पारिवारिक कहानी है। इसमें लेखक ने परिस्थिति की विडंबना को चित्रित किया है। कहानी की नायिका श्यामली घर का पूरा बोझ संभालती हैं। उसकी माँ हमेशा बीमार रहती हैं। उसके भाई में भी शादी के बाद परिवर्तन आता हैं। श्यामली अपने भाई-बहनों के लिए सब कुछ त्यागती हैं। उसका जीवन सुखी डाली की तरह हो गया था। लेखक ने इसे कहानी के माध्यम से नारी की त्यागी वृत्ति की ओर प्रकाश डाला हैं। "मेरा साथी कोई नहीं हैं" में कहानी नायक कॉफी हाऊस में बैठा है, चारों ओर लोग हैं। उनके बीच वह अपने आप को अकेला महसूस करता है और सोचता है - "हसूं? क्यों हसूं? खाउं? क्यो खाउं? पढूं? क्यों पढूं? ऐसी-तैसी करियर की। मैं नहीं पढ़ता। मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता। मेरा साथी कोई नहीं हैं।"[9]

"पूर्णता" कहानी के माध्यम से लेखक ने बताया है कि, समीपी रिश्तेदारों में रक्त-संबंध नहीं रखना चाहिए, इसके कारण बच्चे अपाहिज होते हैं। कहानी का नायक अपने माता के इच्छा के विरूध्द राधा से विवाह करता हैं। राधा उसकी समीपी रिश्तेदार हैं। इसके कारण उसका बच्चा गौतम अपाहिज पैदा होता है। राधा अपने आप को कोसती हैं। वह समझती है उसके कारण ही उसका बेटा अपाहिज पैदा हुआ हैं। अंत में उन्हें पछतावा होता है और वे कहते है - "हमने भूल की थी, चाहे अन्जाने ही की हो - भूल आखिर भूल है। हम माता-पिता नहीं बन सकते थे, स्वस्थ बच्चों के माता-पिता नहीं कहला सकते।"[10] "मिल का मॉडल" कहानी में लेखक ने दिखावटीपन का पर्दाफाश किया हैं। कहानी की नायिका शील एक नर्स है वह अश्विनी से प्रेम करती है। शील असलियत से जीना चाहती है। दिखावटीपन उसे अच्छा नहीं लगता। इसलिए अश्विनी जब पार्टी में उसकी पहचान करवाते समय उसका नर्स का पेशा छुपाता है तो वह कहती है - "मुझे लड़का नहीं आदमी चाहिए था, समझदार आदमी जो जीवन के यथार्थ को उसके स्वाभाविक रूप में स्वीकार कर सकें।"[11]

"अन्य लोग भी" में बताया गया है कि, आज-कल के युवक प्यार का नाटक तो रचाते हैं पर उनमें आत्मविश्वास की कमी हैं। कहानी का नायक क्षितिजा से प्यार तो करता है, पर उसके सामने प्यार का प्रस्ताव रखने से ड़रता है। और जब शादी होती है तो घरवालों के सामने जाने को घबराता हैं। आज-कल के प्रेमियों के कमजोरी पर इस कहानी के माध्यम से प्रकाश डाला हैं।

"पछतावा" में भी दिखावटीपन का प्रदर्शन करनेवाले लोगों का पर्दाफाश किया है। श्याम इंग्लंड से लौटकर आया है। इसलिए माताजी अपने बहू, बेटे और बेटी को श्याम जैसा बर्ताव करने पर मजबूर करती हैं। वे अपने हाथों द्वारा खाना चाहते है पर उसे काटों से खाने को मजबूर करती हैं। "विरोध" कहानी में भी दो प्रेमियों के प्रेम की चर्चा की गयी हैं। उन दोनों में आत्मविश्वास की कमी हैं। वे समाज से डरते हैं। जब वे दोनों घूमने के लिए जाते है तो रास्ते में उन्हें प्रवाल देख लेता हैं। इतनी सी बात को वह डरती है और सोचती है कि, प्रवाल अपने प्यार की चर्चा सभी लोगों में करने लगेगा इसलिए वह नायक से फिर कभी न मिलने का वादा करती है।

"पिल्लू" कहानी में बताया गया है कि, आज-कल नारी पढ़-लिखकर कितना ही ऊँचा स्थान क्यों न प्राप्त करे उसे उपेक्षा भाव से ही देखा जाता हैं। अनीता एक कहानी लेखिका है। उसकी कहानी दैनिक "विश्वामित्र" में छप जाती हैं। यह खुशखबर वह अपने पति को देती है तो पति उसके ओर ध्यान नहीं देता। वह उसकी ओर सिर्फ भोग्य वस्तू के रूप में देखता है, तो वह कहती है - "मुझे छुओं मत। मैं बहुत बड़ी लेखिका हूँ। सम्मान से बात करों।"[12] "काठ" में भी लेखक ने पति-पत्नी में होनेवाले संघर्ष का चित्रण किया हैं। लीला उसके पति सुधीर पर बहुत ही रोब जमाती हैं। लीला को डरकर वह घरमें भी जल्दी आता नहीं। रात में भी जब उसे लगता है कि, अब लीला सो गई तो घर की ओर जाने के लिए मुड़ता हैं। कहानी में नारी के अहंकार की ओर प्रकाश डाला गया हैं।

"मॉरिस नगर" में लेखक ने महानगर में रहनेवाले लोगों के जीवन पर प्रकाश डाला हैं। उनका जीवन घड़ी की तरह हो गया हैं। उन्होंने स्वयं ही अपने ऊपर समय की पाबन्दी लगा ली है। साथ ही लेखक ने महानगर में बढ़ते आबादी के कारण उत्पन्न होनेवाली समस्याओं का भी चित्रण किया हैं। "पुराना दोस्त" में लेखक ने दिखावटीपन की ओर संकेत किया हैं। व्यक्ति अपने व्यवसाय की बात करते हुए पीड़ा से भर उठता हैं। उसे उस पेशे की सारी बुराइयां रोज लगनेवाले इंजेक्शन की तरह कोंचने लगती हैं। दूसरे पेशे की तकलीफों को न जानने के कारण उनमें पीड़ा उठती हैं। "कपूर" कहानी के माध्यम से आज के युवा पीढ़ी की ओर संकेत किया हैं। उनके बेखबर वर्तन पर प्रकाश ड़ाला हैं। कपूर होस्टल में रहता है लेकिन होस्टल के नियमों का पालन करने के बजाय नियम तोड़ता हैं। उसका अनुकरण दूसरे छात्र भी करते हैं। आजकल के माता-पिता अपने बच्चों के वर्तन पर खयाल नहीं देती इसके कारण उनमें कुप्रवृत्तियाँ बढ़ जाती है। "दूसरे कगार का निषेध" के माध्यम से बताया गया है कि, आज की नारी स्वावलंबी हो गयी है। उसकी अहम् भावना

जागृत हो चुकी हैं। उसे निरन्तर मानसिक कुंठाओं ने ग्रस्त किया हैं। उसे अपने स्वतंत्र अस्तित्व की कल्पना हो रही हैं। वह अपनी अलग पहचान बताती है। इस कहानी में नारी ही नारी के पथ की बाधा बन गयी हैं। नायिका की माँ उसके दामाद और बेटी का अपमान करती है तो बेटी कहती है- "जीवन भर न उन्होंने अपने पति का सम्मान किया, न किसी से करवाया। वे मेरी बात क्या समझेंगी। हमने बहुत से गुण लिये है उनसे, दुर्गुण नही लेंगे।"[13] नायिका अपने माँ को ही कोसती हैं।

"सीमा के आर-पार" कहानी में माँ-बेटी के टूटते हुए संबंध पर प्रकाश डाला हैं। यह कहानी भी "दूसरे कगार का निषेध" जैसी ही हैं। इसमें भी नायिका के अम्मा का व्यक्तित्व तिखा दिखाई देता हैं। वह अपने दामाद को अपमानित करती है तो नायिका बहुत क्रोधित होती हैं। वह अम्मा से हमेशा के लिए संबंध तोड़ देती हैं। अपने पिताजी के कहने पर भी घर नही आती। लेखक ने कहानी के माध्यम से नारी के तीखे और स्वाभिमानी रूप के ओर संकेत किया हैं। "दुहराव" कहानी की नायिका राधा विवाह के पश्चात् घरगृहस्थी का पूरा कारोबार स्वयं चलाती हैं। घर के सभी नौकरों को निकालती हैं। घर में जब तक उसकी तीन लड़कियाँ है तो उसे बहुत ही अच्छा लगता हैं। पर लड़कियों के शादी के पश्चात वह घर में अकेली ही होती हैं। और स्वयं को अकेली महसूस करती हैं। अकेलेपन की समस्या उसे सताती है। वह सोचती है - "ये पहाड़-से-दिन कैसे कटेंगे....।"[14] "वापसी" कहानी में लेखक ने सरला और राजन के माध्यम से दाम्पत्य जीवन में एक दूसरे को न समझने के कारण किस प्रकार तनाव बढ़ता है इसका चित्रण किया है। राजन बीमार था उसी समय सरला पूरा पैसा उसपर खर्च करती हैं। पर जब वह अच्छा होता है तो स्वयं के ऐशोआराम में सारा पैसा ऊँडेल देता हैं। अपने पत्नी और बच्चों के तरफ ध्यान नही देता तो सरला कहती है - "तुम गर्म सूट पहनकर मजे से पाइप में इम्पोर्टेड तम्बाकू पियो और मुझको और बच्चों को भट्टी में झोंक दो। तुम यह क्यों नही सोचते कि, घर का खर्च कैसे चलेगा।"[15]

"दृष्टिदेश में एकाएक" यह कहानी लेखक ने अपने पिता के जीवन पर लिखी हैं। "स्वयं पिता बनकर अपने पिता को मैंने और भी निकट से जाना। शायद इसीलिए वृध्दावस्था के प्रति संवेदना और सहानुभूति जागी।"[6] यह उनके जीवन में घटित घटना पर आधारित कहानी हैं। "पारिवारिक और सामाजिक परिवेश का एक युवा दृष्टिद्वारा मर्मभेदी बेबाक विश्लेषण। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि, इस युवा लेखक ने अपनी पिछली पीढ़ी को भी इन कहानियों में भरपूर सहानुभूति दी हैं।"[17] दृष्टिदेश में एकाएक का पिता अपने बेटे के प्रति कृतज्ञ इसलिए नही हो पाता क्योंकि बेटे के प्रयास से पिता को धुंधली दृष्टि के स्थान पर स्पष्ट दृष्टि तो मिली किन्तु इससे उजागर क्या हुआ-उसकी हीनता, कुंठा और चुक गये होने का अहसास।"[18]

"सार्थकता" के माध्यम से बताया है कि, नारी अपना असली रूप छिपाकर दिखावटीपन का बुरखा ओढ़ती है जैसे कि, नायिका के असली बाल छोटे है पर वह उसपर दिखावटी बाल लगाकर अपने असलीयत को छुपाती हैं। लेखक ने इस कहानी के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि, अपने हैसियत से बढ़-चढ़कर रहने के प्रयास में मध्यवर्गीय मनुष्य निरंतर निराश होता जा रहा हैं।

"शटल" कहानी में बताया गया है कि, आज संयुक्त परिवार लगभग टूट रहे हैं। युवा पीढ़ी निरंतर आत्मकेन्द्रित होती जा रही हैं। उनका अपने माता पिता के ओर बिल्कुल ध्यान नही हैं। अपने ही संतान में "शटल" होकर रह जाते हैं। "वे तो उसके पास नहीं आते, कभी कभी ईशरदास ही वहाँ चला जाता है, जहां सब बेटे बैठे होते हैं, पर उसे देखते ही वे एक-एक कर खिसकने लगते है और अन्त में वहां ईशरदास अकेला ही रह जाता है।"[19] लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि, आज अवसरवादी संतान के हाथों अपने ही माँ-बाप शोषण के उपकरण होकर रह जाते हैं। "वेश्या का नौकर" में बताया गया है कि, पति-पत्नी का एक दूसरे के प्रति अविश्वास होने के कारण आज कई परिवारों में पति-पत्नी संबंध बिगड रहे है। पुरूष के लिए स्त्री का आर्थिक रूप से सहयोगी होना तो काम्य है पर अहं के स्तर पर स्वीकार्य नही है। "परिणति" कहानी में प्रेम में भी व्यावहारिकता दिखाई देती हैं। रोमानी आवेश में प्रेमी की सामान्य-सी भेंट में फेरे लेनेवाली लड़की बच्चे के मल को पोछने के लिए सबसे ज्यादा पुरानी साड़ी उसे ही पाती हैं। "जीवन के झूठ और रोमांस को तीखी कलम से छील-छीलकर यथार्थ जीवन को उकेरने वाली कहानी है।"[20] "दूसरी आया" में बताया गया है कि, कामकाजी महिला आज के भारतीय परिवेश में अपनी आर्थिक स्वतंत्रता को एक विशिष्टता के रूप में ले रही है, सहजता के रूप में नहीं लेती। ऐसी स्थिति में स्त्री पुरूष में टकराव निर्माण होते हैं। विवाह अपने-आप में जीवन में एक बहुत बड़ी घटना हो सकती है, किन्तु सन्तान का जन्म तथा उसका पालन-पोषण-भावना, व्यवहार तथा परिस्थितियों इत्यादि के धरातल पर कही अधिक सघन अनुभव है, जो जीवन-क्रम को आपादमस्तक होता है। "अनुभवहीन" कहानी में बताया गया है कि, मानव समाजशील प्राणी हैं। वह कभी भी अकेला नहीं रह सकता। इसे अकेलेपन को मिटाने के लिए वह अपना शील भी खो बैठता हैं। कहानी में बताया है कि सुहासा अपना अकेलापन मिटाने के लिए प्रवीण से दोस्ती करती हैं। उन दोनों में गहरा संबंध स्थापित होता है। उसके साथ शारीरिक संबंध प्रस्थापित करने में भी वह नही हिचकिचाती। अकेलेपन को मिटाने के साथ वह अपने शील को भी मीटा देती हैं।

"किरचे" कहानी खतरें में पड़ी मानवता की मृत्यु की घोषणा नहीं हैं जो कहानी के ऊपरी स्तर पर महसूस हो सकता है प्रत्युत उस मानवता की घोषणा करती है जो अपराजेय है इसलिए विषमतम हालात में भी जीवन्त।"[21] "वृत्त" में बताया है कि, उच्चवर्गीय लोग बड़े-बड़े महलों में रहते है और जमीन के खाली टुकडे पर रहनेवाले गरीब लोग अपना घर बसाए हुए है तो वे उनका घर उजाड़ रहे हैं। कहानी में उच्चवर्गीय लोगों का पर्दाफाश किया हैं। "मेरा अपना संसार" में नारी की दुर्बलता पर प्रकाश डाला हैं। वह पढ़-लिखकर इतनी ऊँची चोटीपर पहुँची है फिर भी उसमें आत्मविश्वास की कमी हैं। नायिका कहती है - "यदि सरला का भाई स्टेशन पर न आया तो? और यदि आया भी और खोज या पहचान न पाया तो?"[22] इस तरह के सवाल उसे सताते हैं। लेखक ने आज की नारी की सामाजिक स्थिति और मानसिकता को बड़ी गहराई के साथ चित्रित किया हैं।

**समग्र कहानियाँ - भाग - 2 :**

प्रकाशन वर्ष : 1991, प्रकाशक : पराग प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली - 32 :

समग्र कहानियाँ भाग दो में कुल मिलाकर 29 कहानियाँ हैं। इन कहानियों का स्थूल अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है -

"शालिग्राम" कहानी के माध्यम से लेखक ने नारी के महानता पर प्रकाश डाला है। नारी का स्थान समाज में अनन्य साधारण हैं। समाज को विकासमान रखने में पुरूष से अधिक नारी का भाग होता हैं। कहानी में मिसेज शर्मा के महानता पर उसका पति कहता है - "कितना विशाल हृदय है उनका देव हृदय सा। पर शालिग्राम चलकर किसी के घर तो नहीं आ जाता ना। वह तो अपने स्थान पर ही प्रतिष्ठित रहता हैं।"[22] "संतुलन" में अर्थ के कारण पति-पत्नी में होनेवाली अनबन की ओर प्रकाश डाला गया है। सुनिति स्वयं नौकरी करके आर्थिक रूप में स्वातंत्र्य पाने के कारण मनमाने ढंग से बर्ताव करना चाहती है। लेखक ने इस कहानी में बताया है कि, अर्थ के कारण दाम्पत्य जीवन में भी किस तरह तनाव बढ़ता जा रहा है। "हिन्दुस्तानी" भारतीय अस्मिता को खोने की कहानी हैं। "मैं जानती हूँ वह दोगला और हरामी होगा। पर उसका सम्मान मुझसे ज्यादा होगा, तुमसे ज्यादा होगा क्योंकि वह भारत जैसे घटिया राष्ट्र का अंग नहीं होगा। मैं जिन्दगी भर अपनी राष्ट्रीयता के कारण लज्जित रही पर मैंने अपनी अगली पीढ़ी को उबार लिया है।"[23] ऑफिस में आम तौर पर कामकाज किस प्रकार चलता है। तथा ऑफिस के बॉस स्त्रियों के साथ कैसे बर्ताव करते है। बॉस डटकर काम करने के बजाय जी खोलकर ऐश करते हैं। इस बात को लेखक ने अपनी ओजस्वी भाषा और शैली से उभारा हैं।

"बला" कहानी में लेखक ने बताया है कि, बच्चों की देखभाल करना, उसे बड़ा करना, यह जिम्मेदारी सिर्फ स्त्री की ही है ऐसा पुरूष मानते हैं। बच्चों को संभालना तो दूर, उसके रोने के आवाज से तंग आकर पीयूष अपनी पत्नी केशा को मायके चले जाने के लिए बाध्य करता हैं। जब वह वापस आती है तो वह उसे बला समझता है - "दो-चार पैडल मारते ही उसे लगा कि, उसके मुंह का स्वाद कड़वा हो रहा है।.... आज फिर उसे आराम नहीं मिलेगा, आज फिर वह सो नहीं पाएगा। फिर वह बला अपने साथ ले आया था।"[24]

"खर्च, डायरी और अस्पताल" में लेखक ने अर्थ के कारण पिसता हुआ मध्यम वर्ग का सजीव चित्रण किया हैं। असुरक्षा और अभाव व्यक्ति को हिसाबी-किताबी बना देता हैं। और इस हिसाब-किताब का निरन्तर तनाव व्यक्ति को आक्रान्त किए रहता हैं। "शव यात्रा" में लेखक ने लोगों के दिखावटी वृत्ति पर प्रकाश डाला हैं। मन में कुछ और होता है और बाहर तो दिखावटीपन का प्रदर्शन करते है। सेठी का साला मरने पर उसके पिताजी बहुत आक्रोश करते है और जब उसकी शवयात्रा निकलती है तो रास्ते में कोकाकोला पिते हुए कहते है "पता नहीं लोग साले इतनी गर्मी में क्यों मरते हैं।"[25] दुनिया में ऐसे भी लोग है जो सिर्फ व्यावहारिकता देखते हैं। "घर में एक मौत" में लेखक ने यह सुचित किया है कि, अग्नि का अंतिम संस्कार है, अन्धविश्वास के कारण उसमें भी किस तरह बाधा उत्पन्न होती है इसका चित्रण बड़े खुबी से इस कहानी में किया हैं। चाचाजी की मृत्यु क्षयरोग के कारण होती हैं। लोग उन्हें स्मशान में तो ले जाते है लेकिन उन्हें अग्नि देने से डरते हैं। क्योंकि चाचा क्षयरोग से मरे थे और क्षयरोग से मरे मुर्दे को आग देकर, कौन स्वयंम् क्षयरोग से मरने का जोखिम उठाता। अंध:विश्वास पर चलनेवाले लोगों का लेखक ने पर्दाफाश किया हैं। "नमक का कैदी" में लेखक ने बताया है कि, नमक हमें मामुली सी चीज लगती है, लेकिन मनुष्य के जीवन में नमक का होना अनिवार्य हैं। बीना नमक के मनुष्य के जीवन का मीठासपन चला जाता है। कहानी में मुख्य रूप से मनुष्य के मनोदशा का चित्रण किया गया हैं। "नालायक" कहानी में मध्यम वर्ग पर प्रकाश डाला हैं। दिखावटीपन के कारण मध्यमवर्गीय मनुष्य निरन्तर निराश होता है। मेहमानों के सामने अपने असली रूप को छिपाने का प्रयास किया हैं। कहानी में माँ को अपने बेटों के असलीयत के बारे में पता हैं। पर महेमान जब उनकी स्तुति करते है तो वह चुप रहती है मन ही मन कहती है - "वहां वे रो तो सकेंगी, नहीं तो विपुल देख लिया तो नालायक रोने भी नहीं देगा।"[26]

"पालतू कबूतर" में लेखक ने द्विधा मन:स्थिति में फँसे हुए लोगों का चित्रण किया हैं। नायक अपने पत्नी को मायके भेजकर सुखी बनना चाहता है पर असलीयत में जब वह मायके

चली जाती है तो वह बुरी तरह फँस जाता है। पत्नी के मायके चले जाने के बाद क्या-क्या करना है, किस तरह मजे लुटने है इसका मन-ही-मन अंदाज बांधता है, लेकिन प्रत्यक्ष रूप में कुछ भी नहीं कर पाता। "चुभन" में बताया है कि, अर्थ के कारण आज समिपी रिश्ते भी टूटे जा रहे हैं। अर्थ की कमी होने के कारण बेटा अपनी माँ को बदन ढाँपने के लिए एक झंपर भी नहीं लाता, उनमें मतभेद निर्माण होते है। मानव समाज रूपी संरचना को भूल रहा है।

"निचले फलैट में" कहानी के शुरूआत में पति-पत्नी में टकराव नजर आता है। दाम्पत्य जीवन की पहली शर्त समझौता मानी जाती है। समझौता अगर नहीं हो तो उनमें दरार निर्माण होती है। लेखक ने समाज में बढ़ती हुई अमानवीयता के स्पष्ट चित्र खिंचे हैं। मनुष्य के जड़ीभूत आचरण के कारण ही मनुष्यता के लिए चिन्ता पैदा होती है। "परायी हथेलियों पर टिका भविष्य" इस कहानी में लेखक ने बताया है कि, आज-कल के माता-पिता अपने जवान बच्चों की मनःस्थिति का, उनके उम्र का उनके विवाह का जरा भी विचार नहीं करतें। अपने ही कामों में मशगुल होते हैं। चारू अपना विवाह तय करने के लिए माँ को दीदी के घर जाने कहती है तो माँ कहती है - "तू ही चली जा। मुझे क्या करना है लड़का देखकर।"[27] यह हुई आज के बेखबर माता-पिता की बात। कहानी में आज के बेखबर माता-पिता की ओर संकेत किया गया हैं। "इन बच्चों के सदके" में भाटिया साहब जब प्रिंसिपल बनते है तो उनमें जो परिवर्तन आता है उसका चित्रण किया हैं। आज के लोग जरा सा ऊँची जगह पहुँच जाय तो उनमें परिवर्तन आ जाता हैं। वे अपने पिछले दिन भूल जाते हैं। भाटिया साहब जब साधारण लेक्चरर थे तो वे बहुत ही सरल और सिधे-साधे थे। परंतु प्रिंसिपल बनने के बाद उनमें दिखावटीपन आता हैं। आज-कल के लोगों में होनेवाले परिवर्तन का चित्रण किया गया है। "निर्णय" कहानी में बताया गया है कि, अमीर लोग गरीब लोगों को किस तरह धोखा देते हैं। साथ ही बताया गया है कि, गरीब लोग अपना बचन कैसे निभाते हैं। पानसिंह और गौरी पति-पत्नी हैं। उन दोनों के माध्यम से गरीबों के वफादारी पर प्रकाश डाला हैं। "माँ जानती हूँ" कहानी में देशप्रेम की ओर संकेत किया है। अल्मुगम अपने कर्तव्य का पक्का था। उसने बचपन में ही जमींदार को कहा था - "काम पूरा होने से पहले नहीं मरूंगा, साहब।"[28] अल्मुगम के द्वारा सच्चे राष्ट्रप्रेम को व्यक्त किया है। वह मरते दम तक कर्तव्य का पक्का था। "उत्तराधिकार" में बिगड़ते हुए पिता-पुत्र सम्बन्ध पर प्रकाश डाला हैं। युवक अपने उत्तराधिकार को भूल रहे हैं। सलूजा अपने बीमार पिताजी की देखभाल करने के बजाय उसके मरने का इन्तजार करता हैं। घर में अपने बीमार पिता को अकेला छोड़कर पत्नी के साथ पार्टी में जाकर मौज-मजा लूटता है। इतना ही नहीं तो अंत में जब इसे बेखबर बेटे का बाप मर चुका था, तो वह अपने पत्नी से कहता है - "सुधा। ब्रेकफास्ट लगवा दो और मेरे दफतर फोन कर दो कि, मैं नहीं आ रहा हूँ।"[29]

इस कहानी में लेखक ने आजकल के युवकों का पर्दाफाश किया है जो अपने उत्तराधिकार को भूल चुके हैं। "रसोई से लौटते पांव" में आतंरजातिय विवाह करने पर जो तनाव निर्माण होता है उसका चित्रण किया है। समाज में आज भी छुआ-छूत की समस्या है। लोग आंतरजातिय विवाह तो करते है पर छुआछूत की समस्या मन से बाहर नही निकालतें। सुनन्दा और हुलास का आंतरजातिय विवाह हुआ हैं। पर सुनन्दा अब्राहमण होने के कारण हुलास के घरवालें उसके हाथों द्वारा पकाया हुआ खाना नही खातें। "हत्यारा" कहानी में लेखक ने बताया है कि, आज समाज में सामाजिक स्थिति सुव्यवस्थित रखने के लिए पुलिस होती हैं। गुनहगारों को खोजकर उन्हें सजा देने के लिए पुलिस होती है लेकिन पुलिस और प्रशासन में भ्रष्टाचार बढ़ गया हैं। कानून के अधिकारियों ने कानून को ही अपने हाथ ले लिया हैं। आज-कल पुलिस विभाग के लोग समाज का रक्षण करने के बजाय उनके साथ घिनौना बर्ताव करते हैं। पुलिस अफसरों के बेजबाबदार वर्तन का सजीव चित्र नरेन्द्र कोहली ने अपने इस कहानी में खिंचा हैं। "एक ही विकल्प?" यह कहानी लेखक ने तीन बार लिखी थी। पहली बार यह "अंधेरे का जीवन" नाम से "कहानी" पत्रिका में प्रकाशित हुई। इसके पश्चात उनके मन में एक बात क्रौंधती रही कि, उस कहानी में और बहुत कुछ कहने और चित्रित करने का अवकाश था, उन्होंने पुनः उसे उपन्यास रूप में लिखा। किन्तु फिर उन्हें लगा कि इसे अनावश्यक विस्तार दे दिया है और फिर तीसरी बार उसे लिखा "एक ही विकल्प" के रूप में सामने आयी। "एक ही विकल्प" यह परिस्थितियों की विडंबना की कहानी हैं। "चारहान का जंगल" लेखक के पिताजी के जीवन में घटित एक घटना पर आधारित कहानी हैं। "पद-प्रतिष्ठा" इस कहानी में लेखक ने महाविद्यालयों में चलता भ्रष्टाचार, अध्यापकों की स्थिति तथा अध्यापक-विद्यार्थियों के बदलते हुए रिश्ते को चित्रित किया हैं। साथ ही साथ लेखक ने बताया है कि, अधिकार का दुरूपयोग गुरू-शिष्य के संबंध में आया बदलाव, आदर्श का अभाव आदि के कारण शिक्षा संस्था का स्तर धीरे-धीरे घटता जा रहा हैं। "पहचान" कहानी में लेखक ने पिता-पुत्र सम्बन्ध की ओर प्रकाश डाला हैं। साथ ही उन्होंने बतया है कि, आज के विश्व में "पहचान" की मनुष्य को कितनी जरूरत होती है, उसके बिना मनुष्य का अस्तित्व नही समझ पाता। पहचान या पहचानने के लिए वह बेताब हो जाता है, यह इस कहानी के माध्यम से लेखक ने सूचित किया हैं। "अहसान" कहानी में मानव प्रवृत्ती पर लेखक ने प्रकाश डाला हैं। "जिस लड़की की इज्जत लूटकर उसे बेचना चाहता था, वही लड़का अपने भाई का पर्चा खराब होने पर उसी लड़की के पिता, जिनके पास वह पर्चा आया था, उनसे कहकर वह अपने भाई को पास कराना चाहता हैं।"[30] कहानी में लेखक ने आदमी के दो रूपों पर प्रकाश डाला हैं। जिसे वह समय के अनुसार स्वार्थ के लिए उपयोग

में लाते हैं। 'नींद आने तक' कहानी में लेखक ने नारी की दयनीय स्थिति को उभारा हैं। कहानी की नायिका शीला किसी दफ्तर में काम करती हैं। वह बस के कंडक्टर और ड्रायव्हर की शिकार बनती हैं। शीला पर अन्याय हुआ है। फिर भी उसका पति शीला को ही दोषी समझता हैं। अपने देश में आज भी नारी पर अन्याय होते है इसका जिम्मेदार पूर्णतः पुरूष है फिर भी वह नारी को ही दोषी समझता हैं। कहानी में लेखक ने पीड़ित नारी की मनोदशा का चित्रण किया हैं। "संचित भूख" कहानी में लेखक ने बताया है कि, देश के विभाजन के समय हिन्दू-मुसलमानों के बीच जो झगड़े हुए उसमें निरपराध जनता किस तरफ फँसी थी। विभाजन के समय मुसलमान लोगों ने हिन्दुओं के घर जला दिए थे। कैम्प में अपनी बीमार माँ की हालत देखकर गोपाल कर्फ्यु में अपने घर जाकर कुछ सामान लाना चाहता है। बिरजू यह भी भूल जाता है कि, उसकी जान खतरे में हैं। भूख के कारण वह अपना डर भूल जाता हैं। "संचित भूख" खाना खाकर मिटाता है।

इस प्रकार नरेन्द्र कोहली को हिन्दी साहित्य की नयी कहानी के प्रणेता माना जाता हैं। आप हिन्दी साहित्य को समृध्द बनानेवालों में से हैं। आपकी भाषा सरल, स्वाभाविक और आजेस्वी हैं। आपका उल्लेख तथा कार्य-मुल्यांकन किये बिना हिन्दी कहानी-साहित्य का इतिहास परिपूर्ण नही बन सकता।

**निष्कर्ष :**

नरेन्द्र कोहली नई कहानी के प्रमुख लेखकों में से हैं। आपने 1960 ई. के आस-पास कहानियाँ लिखना आरंभ की। लगभग 70 के आस-पास होनेवाली आपकी कहानियाँ मुख्य आठ कहानी संग्रहों में संग्रहित हैं। विषय की विविधता, आधुनिक समाज की समस्याएँ आपके कहानियों में दिखाई देती हैं। कोहली जी अपने - आप में पुराने परिपाठी से अलग रखने में तथा परम्परा का नये सिरे से विकास करने में सदैव सफल रहे हैं। आपकी कहानियों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि, लेखक ने अपनी कहानियों में मध्यमवर्गीय मानव को उभारने का सफल प्रयास किया हैं। उनकी कहानियों में मध्यमवर्ग एवं निम्न-मध्यवर्ग के विवशता एवं कुंठाओं के चित्र अधिक सजीवता के साथ अंकित किया हैं। कोहली जी अपने कहानियों में रोजाना व्यवहार में आनेवाली अकृत्रिम भाषा-शैली का प्रयोग करते हैं। आधुनिक कथा साहित्य में कोहली जी की कहानी यात्रा सफल एवं समर्थ सिध्द हुई हैं।

## संदर्भ


| | | |
|---|---|---|
| 1) | कोहली नरेन्द्र – समग्र कहानियाँ भाग – 1 | पृ.25 |
| 2) | वही | पृ.30 |
| 3) | उपाध्याय नर्मदा प्रसाद – व्यक्तित्व एवं कृतित्व : नरेन्द्र कोहली | पृ.30 |
| 4) | कोहली नरेन्द्र – समग्र कहानियाँ भाग – 1 | पृ.68 |
| 5) | वही | पृ.79 |
| 6) | वही | पृ.97 |
| 7) | वही | पृ.113 |
| 8) | वही | पृ.118 |
| 9) | वही | पृ.136 |
| 10) | वही | पृ.143 |
| 11) | वही | पृ.157 |
| 12) | वही | पृ.180 |
| 13) | वही | पृ.208 |
| 14) | वही | पृ.227 |
| 15) | वही | पृ.236 |
| 16) | कोहली नरेन्द्र – समग्र कहानियाँ – प्रस्तावनासे | |
| 17) | आत्म कथ्य – कुछ नरेन्द्र कोहली के विषय में | पृ.16 |
| 18) | उपाध्याय नर्मदा प्रसाद – व्यक्तित्व एवं कृतित्व | पृ.34 |
| 19) | वही | पृ.34 |
| 20) | आत्मकथ्य – कुछ, नरेन्द्र कोहली के विष में | पृ.13 |
| 21) | उपाध्याय नर्मदा प्रसाद – व्यक्तित्व एवं कृतित्व – नरेन्द्र कोहली | पृ.36 |
| 22) | कोहली नरेन्द्र – समग्र कहानियाँ – भाग – 2 | पृ.18 |
| 23) | उपाध्याय नर्मदा प्रसाद – व्यक्तित्व एवं कृतित्व – नरेन्द्र कोहली | पृ.32 |
| 24) | कोहली नरेन्द्र – समग्र कहानियाँ भाग – 2 | पृ.35 |
| 25) | वही | पृ.44 |
| 26) | वही | पृ.106 |
| 27) | वही | पृ.160 |

28) कोहली नरेन्द्र - समग्र कहानियाँ भाग - 2 पृ.243

29) वही पृ.250

30) वही पृ.147

---